एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8006T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत कथा साहित्य अतिसमृद्ध है। प्राकृत में लगभग चौथी–पाँचवीं शताब्दी से कथाएँ लिखी जाती रहीं। समराइच्चकहा प्राकृतकथा साहित्य का एक प्रमुख ग्रन्थ हैं जिसका भाषात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत कथा एवं चरित विधाओं के बारे में अध्ययन करेंगे। इस्ससे विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में प्राकृत साहित्य की विविध विधाओं की समझ विकसित होगी। 2. कथाओं के अध्ययन से विद्यार्थियों की रूचि जागृत होगी। 3. समराइच्च कहा के माध्यम से जीवन जीने की कला की समझ होगी। 4. विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	समराइच्चकहा (प्रथम भव) सम्पादक- डॉ. रमेशचन्द्र जैन साहित्य भण्डार, मेरठ	12
इकाई - II	पठित ग्रन्थ का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - III	प्राकृत कथा साहित्य की समीक्षा	12
इकाई - IV	प्राकृत चरित साहित्य की समीक्षा	12
इकाई - V	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ. के.सी.सोगानी) के पाठ 42 से 84 का अभ्यास, किन्हीं आठ वाक्यों का हिन्दी से प्राकृत में अनुवाद पूछना	12
सहायक पुस्तकें	1. समराइच्चकहा (पढमो भव), राष्ट्रिय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रवणबेलगोला, कर्णाटक – 2015 2. समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. झिनकू यादव, भारतीय प्रकाशन, वाराणसी – 1977 3. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन - डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार – 1965 4. वृहत्कथाकोश - सम्पा. - डॉ. ए.एन.उपाध्ये, भारतीय विद्या भवन, वाराणसी – 1942 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 6. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डॉ. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर इन्ट्रोडक्शन 7. प्राकृत स्वयं शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 2015 8. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 9. बाल रूप प्राकृत - डॉ. उदय चन्द्र जैन, मरुधर केसरी, साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर – 1999 प्राकृत का जैन कथा साहित्य - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8007T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृतसाहित्य में सट्टकों का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्पूरमंजरी प्राकृत सहित्य की सट्टक विधा का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसका भाषात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत के विविध रूपों मागधी एवं शौरसैनी की विशेषताओं के बारे में अध्ययन करेंगे एवं प्राकृत व्याकरण का अध्ययन भी इस पत्र के द्वारा किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1) सट्टक के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्यिक रूचि जागृत होगी। 2) कर्पूरमंजरी के अध्ययन से साहित्य की सौन्दर्यानुभूति प्रकट होगी। 3) विद्यार्थियों में प्राकृत व्याकरण की समझ विकसित होगी। 4) विद्यार्थियों को प्राकृत साहित्य विविध विधाओं के अध्ययन से प्राकृत साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	कर्पूरमंजरी राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य) सम्पा. डॉ. रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974	12
इकाई - II	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र-चित्रण	12
इकाई - III	सट्टक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - IV	हेमशब्दानुशासन के चतुर्थपाद के सूत्र नं. 287-302 (प्राकृत प्रवेशिका के मागधी सूत्र) आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों के सोदाहरण अर्थ पूछना आवश्यक है।	12
इकाई - V	मागधी प्राकृत एवं शौरसेनी प्राकृत की प्रमुख विशेषतायें	12
सहायक पुस्तकें	1. कर्पूरमंजरी, साहित्य भण्डार, मेरठ – 2016 2. आचार्य राजेशखर - डॉ. श्यामवर्मा, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल – 1971 3. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र 4. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017 5. प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदयचन्द्र जैन, , प्राकृत, आगम एवं अहिंसा शोध संस्थान, उदयपुर, 2002 ई 6. प्राकृत प्रवेशिका - डॉ. कोमल चंद जैन, तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी – 2013 7. सिद्धहेमशब्दानुशासन (प्राकृत व्याकरण की हिन्दी व्याख्या सहित) - श्री प्यारचन्द जी महाराज	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8008T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III
पाठ्यक्रम का नाम	अर्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राकृत आगम साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। आगमों के अंतर्गत उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को शिक्षा एवं विनम्रता का ज्ञान होगा। अर्धमागधी आगमों में प्रयुक्त भाषा को जानेंगे। भाषा के अध्ययन के लिए प्राकृत व्याकरण के संज्ञा, क्रिया और कृदन्त का अध्ययन भी इस पत्र में करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन से शिक्षा एवं विनम्रता जैसे मूल्यों की समझ विकसित होगी। 2. अर्धमागधी आगमों में प्रयुक्त भाषा का ज्ञान होगा। अर्धमागधी प्राकृत के रूपगठन के लिए संज्ञा, क्रिया और कृदंतों की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	उत्तराध्ययन सूत्र - नमिप्रवज्या (1 से 62 गाथाएँ)	12
इकाई - II	उत्तराध्ययन सूत्र - विनय अध्ययन (1 से 20 गाथाएँ) केशी गौतम अध्ययन का मूल्यांकन	12
इकाई - III	अर्द्धमागधी साहित्य का सर्वेक्षण	12
इकाई - IV	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा के संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण सहित विवेचन	12
इकाई - V	अपभ्रंश के प्रमुख कविः स्वयंभू, पुष्पदन्त, वीरकवि, धनपाल, रइधू आदि के योगदान एवं उनके ग्रन्थों पर सामान्य प्रश्न	12
सहायक पुस्तकें	1. उत्तराध्ययन - एक समीक्षात्मक अध्ययन - आचार्य तुलसी 2. उत्तराध्ययनसूत्र - तेरापंथ महासभा - कलकत्ता 3. उत्तराध्ययनसूत्रम् - शिवमुनि 4. उत्तराध्ययन - अनु. संपा. आचार्य सुभद्र मुनि 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 6. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य का इतिहास: डॉ. एल.बी.राम अनन्त 7. भविसयत्तकथा एवं अन्य अपभ्रंश कथा काव्य - डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री 8. अपभ्रंश भाषा और साहित्य - डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली - 1965 9. रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन - डॉ. राजा राम जैन, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार – 1974 10. प्राकृत काव्य सौरभ - डॉ. प्रेम सुमन जैन, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर – 2005 11. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8009T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	महाराष्ट्री प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत काव्य साहित्य के महत्त्व को जानने के लिए आख्यानमणि कोष एवं गउडवहो जैसे अद्वितीय काव्यों का इस पत्र में अध्ययन किया जायेगा। प्राकृत भाषा का एक महत्वपूर्ण भेद महाराष्ट्री प्राकृत है। इस भाषा की विशेषताओं का ज्ञान होगा तथा महाराष्ट्री प्राकृत की संरचना के लिए संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और कृदंतों का भी अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों को महाराष्ट्री प्राकृत में रचित काव्यों का ज्ञान होगा। 2. प्राकृत महाकाव्य गउडवहो की जानकारी होगी। 3. आख्यानमणिकोश ग्रन्थ के अध्ययन से आख्यान सम्बन्धी समझ विकसित होगी। 4. महाराष्ट्री प्राकृत की संरचना के लिए संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और कृदंतों का भी ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	आख्यानकमणिकोश (आम्रदेवसूरि वृत्ति) तीसरा अधिकार 15वीं कथा रोहिण्याख्यानकम् संदर्भ ग्रंथः रोहिणीकहा (गाथा 1 से 100 तक) सम्पा. डॉ. प्रेमसुमन जैन, साहित्य संस्थान, उदयपुर	12
इकाई - II	गउडवहो (वाक्पतिराज) स. एन.जी.सुरू सन्दर्भ पुस्तिकाः वाक्पतिराज की लोकानुभूति, गाथाएं 1-50 संकलन- डॉ. के.सी.सोगानी, जयपुर-1983	12
इकाई - III	पठित ग्रन्थों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई - IV	महाराष्ट्री प्राकृत का परिचय एवं विशेषताएँ	12
इकाई - V	महाराष्ट्री प्राकृत भाषा की व्याकरण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के नियम	12
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई. 2. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डॉ. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, 2015 ई. 3. गोडवहो, महाकवि वक्पतिराज, सम्पादक- डॉ मिथेलेश कुमारी, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, अहमदाबाद, 2002 4. आख्यानमणि कोश , नेमिचन्द्रसूरी, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, अहमदाबाद, 2002 5. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर, 2017 ई. 6. जैन संस्कृति कोष भाग 1 से 3 - प्रो. भाग चन्द्र जैन, सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर – 2002 7. प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द्र जैन, प्राकृत, आगम एवं अहिंसा शोध संसथान, उदयपुर, 2002 ई.	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8010T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V
पाठ्यक्रम का नाम	जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांत अनेकान्तवाद की उपयोगिता एवं जैनाचार पद्धति का अध्ययन करेगे। जैनदर्शन के सिद्धांतों का भारतीय दार्शनिक परंपरा के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करेंगे साथ ही जैन संस्कृति की प्राचीनता के विविध आयाम, जैन पर्व और उनकी महत्ता का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांत अनेकान्तवाद की व्यावहारिकता और प्रयोगात्मकता की समझ विकसित होगी। 2. जैनाचार पद्धति का अध्ययन से मनुष्य के जीवन में नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान की जानकारी होगी। 3. जैनदर्शन के गुणस्थान, नय, निक्षेप आदि सिद्धांतों का भी ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैनविद्या के प्रमुख सिद्धान्त एवं दार्शनिक परम्परा - प्राचीनता एवं विविधता	12
इकाई - II	जैन दर्शन में गुणस्थान, अनेकान्त की पृष्ठभूमि एवं सापेक्षवाद का तुलनात्मक अध्ययन, अनेकान्त एवं भाषा दर्शन, अनेकान्त की व्यवहार्यता।	12
इकाई - III	जैन दर्शन में नय एवं निक्षेप की तात्त्विक पृष्ठभूमि, वचनव्यापार का नियामक - स्याद्वाद : सिद्धान्त एवं स्वरूप, सप्तभंग तथा उसकी समसामयिकता का विश्लेषण	12
इकाई - IV	जैनाचार: श्रमणाचार का वैशिष्ट्य (महाव्रत, मूलगुण, समिति, ध्यान एवं तप) एवं श्रावकधर्म का वैशिष्ट्य (अणुव्रत दर्शन, प्रतिमाएँ, सप्तव्यसन-त्याग)	12
इकाई - V	जैन संस्कृति की प्राचीनता के विविध आयाम, जैन पर्वों की महत्ता	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, 2012 ई 2. जैन धर्म - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 3. जैन धर्म - आ. सुशील मुनि 4. जैन धर्म, दर्शन - डॉ. रमेश चन्द्र जैन 5. जैन धर्म - डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री 6. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो. प्रेम सुमन जैन 7. तत्त्वार्थसूत्र - पं. सुखलाल सिंघवी 8. जैन दर्शन - पं. महेन्द्र कुमार जैन, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रंथमाला, काशी - 1966 9. जैन दर्शन: मनन और मीमांसा - मुनि नथमल 10. जैन धर्म-दर्शन - डॉ. मोहन लाल मेहता 11. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1965	

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8100T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	जी.ई.सी. (Generic Elective Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला का अध्ययन जैन एवं बौद्ध सन्दर्भों के माध्यम से करेंगे, साथ ही महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय एवं बुद्धकालीन भारतीय परिस्थितियों का विशिष्ट अध्ययन करेंगे। बौद्धदर्शन के सिद्धांतों - चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, ध्यान चतुष्टय, अनात्म अनीश्वरवाद, शील, समाधि एवं प्रज्ञा का अध्ययन करेंगे, साथ ही बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव, मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता का अध्ययन करेंगे। जैनसंस्कृति, सिद्धांत एवं आचार-पद्धति के अध्ययन से मनुष्य के जीवन में नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान की जानकारी होगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला की समझ विकसित होगी। 2. बौद्ध के चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, शील, समाधि एवं प्रज्ञा आदि का ज्ञान होगा। 3. महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय एवं बुद्धकालीन परिस्थितियों का ज्ञान होगा। 4 .बौद्ध धर्म की मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	महावीर एवं बुद्धकालीन भारतीय परिस्थिति, महात्मा बुद्ध का जीवन–परिचय	12
इकाई – II	रत्नत्रय, चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, अणुव्रत संहिता	12
इकाई – III	अनेकांत, प्रतीत्यसमुत्पाद, ध्यान चतुष्टय, अनात्म अनीश्वरवाद, शील, समाधि एवं प्रज्ञा	12
इकाई – IV	जैन एवं बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव	12
इकाई – V	जैन एवं बौद्ध धर्म - मूर्ति एवं स्थापत्य कला	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म – डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, 2012 ई. 2. बौद्ध संस्कृति का इतिहास – प्रो. भाग चन्द्र जैन, आलोक प्रकाशन, नागपुर, 2012 ई. 3. बौद्ध दर्शन – राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, नई दिल्ली, 2022 ई. 4. बौद्ध दर्शन – बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई. 5. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1–2, भरतसिंह उपाध्याय, बंगाल हिंदी मंडल, कलकत्ता- 1956 6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन, राजस्थान संस्कृति संस्थान, 2004 ई. 7. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा एवं मन्दिर – वासुदेव उपाध्याय, विहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972 ई. 8. जैन कला एवं स्थापत्य, अमला नन्द घोष, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1971 ई. भाग 1-3 9. जैन प्रतिमा विज्ञान, मारुति नंदन तिवारी, पार्श्वनाथ विद्या आश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1971 ई.	